डॉ० अणिमा सिंह

जन्म : 15 सितम्बर 1924 ई०।

जन्म-स्थान : सहमौरा (सहरसा)।

कृति : **'मैथिली लोकगीत'**।

सम्पादन : **'मिथिला दर्शन'**।

कलकत्ता विश्वविद्यालयक लेडी ब्रेवार्न कालेजमे हिन्दीक पूर्व प्रोफेसर अणिमा सिंह मैथिली लोक साहित्य ओ लोकगीतक विशेषज्ञा छथि। डॉ. सिंह, मैथिली साहित्य मध्य प्रतिष्ठित विदुषीक रूपमे समादृत छथि। अपन पति डॉ० प्रबोध नारायण सिंहक सान्निध्यमे मैथिली आन्दोलन एवं सामाजिक कार्यमे सेहो सक्रिय रहलीह। साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा 1993 ई०मे प्रकाशित हिनक 'मैथिली लोकगीत' एक प्रामाणिक ग्रंथ थिक जाहिमे देवी-देवता, व्रत एवं सामयिक उत्सव, संस्कार सम्बन्धी, विवाह संस्कार सम्बन्धी, ऋतु सम्बन्धी, श्रम सम्बन्धी एवं विविध प्रकारक एक हजार बारह गोट लोकगीत संकलित अछि।

पाठ-संदर्भ : अनादिकालसँ लोककंठ द्वारा संपोषित मैथिलीक लोक साहित्य मैथिलीक अमूल्य निधि थिक। प्रस्तुत निबंधमे लेखिका लोकगीतक उद्‌भव ओ विशेषताक प्रसंग गवेषणापूर्ण विवरण देलनि अछि।

मैथिली लोकगीत : किछु वैशिष्ट्य

काव्यात्मक अभिव्यक्ति सभक अनेक विधा मानल गेल अछि। सरस अभिव्यक्ति जनमानससँ निःसृत हो अथवा मुनि-मानससँ, प्रत्येक अवस्थामे ओ काव्य-कृतिए मानल जायत। लोकगीत एक एहन प्रकारक काव्य अछि जकर विशेषता तुलनात्मक रूपसँ अद्‌भुत आ अनेक अछि। एहन विशेषता काव्यक कोनो अन्य विधामे प्रायः नहि पाओल जाइछ।

लोकगीतक सर्वाधिक वैशिष्ट्यपूर्ण बात ई अछि जे मुखमे एकर सृष्टि होइछ तथा हृदयमे एकर निवास होइछ। एकर केवल मौखिक प्रचार होइत आयल अछि। एकरा लिखि कऽ रखबाक परिपाटी नहि रहल अछि। शिक्षाक प्रचार-प्रसारक बादो एकर लेखनक व्यापक प्रचार नहि भऽ सकल। आइयो अनेक क्षेत्र एहन अछि जतऽसँ लोकगीतक संग्रह नहि भऽ सकल अछि। लोकगीतक विशाल परिमाणकेँ देखैत ई कहल जा सकैत अछि जे आइ धरि लोकगीत-संग्रहक लेल जे सभ कार्य भेल अछि ओ सर्वथा अपर्याप्त अछि। इहो ध्यान देबाक विषय अछि जे लिखबाक पश्चात् लोकगीत अनमनीय (Rigid) भऽ जाइछ तथा स्मृति-पटलपर अंकित गीतक रूप स्थिर नहि भऽ सकैछ, ओ अपन नमनीयताक रक्षा सहज रूपेँ करैत रहैत अछि। एहि प्रकारेँ हम कहि सकैत छी जे मात्र चिर प्रवहमानतामे एकर रक्षा होइत छैक।

शास्त्रीय गीत जकाँ लोकगीतक भिन्न-भिन्न गीतकार ओ स्वरकार नहि होइत छथि। साँच पूछल जाय तँ कोनो व्यक्ति-विशेष लोकगीतक गीतकार नहि होइत छथि। पूर्ण निजस्व नामक वस्तु लोकसाहित्यमे नहि होइछ। मिश्र उपकरण लऽ कऽ लोक-संस्कृतिक गठन होइत अछि, ताहि प्रकारेँ मिश्र उपकरणहिक द्वारा लोक-साहित्यहुक सृष्टि होइत अछि। लोक गीतहुमे एकर व्यतिक्रम नहि पाओल जाइछ। समाजक विशेष प्रकारक वातावरण जखन कोनो व्यक्तिक रस-चेतनाकेँ प्रभावित करैछ तखन व्यक्ति-मनक रसतन्त्री पर आघात होइछ आ अकस्मात् ओतहि गीत प्रकट

भऽ जाइछ। सामूहिक मन पहिनहि एक स्वरमे बान्हल छल, तेँ एक व्यक्तिक माध्यमसँ प्रकटित गीतकेँ दस व्यक्ति अपन बना लैत छथि। अतः कहल जा सकैछ जे लोकगीत रचित नहि होइछ, वरन समाज-मनसँ ओ विकसित होइत अछि। समाज-जीवनक संग लोक-साहित्यक अगांगी सम्बन्ध रहैत अछि। अतः समाजक परिवर्त्तनक संगहि लोकगीतहुमे परिवर्त्तन होइत रहैत छैक। संगहि मूल लोकगीतकारक पता लगा सकब सेहो असम्भवे बूझि पड़ैछ।

शास्त्रीय संगीतक लेल ई आवश्यक होइछ जे ओकर पुनः पुनः अभ्यास कयल जाय। लोकगीतक लेल एहन कोनो बाध्यता नहि रहैत छैक।

सामान्यतः विधिवत् लोकगीत सिखबाक आवश्यकता ककरो नहि छैक। संगहि ओकरा सिखबाक अथवा सिखयबाक लेल कोनो विद्यालय अथवा शिक्षक नहि भेटैत छथि। कोना एहि सभक रचना कयल जाइछ, कोना ई सभ स्मरण राखल जा सकैत छैक अथवा कोना स्वर-तालादि सीखऽ पड़त एकर ज्ञानक लेल विधिवत् प्रणाली नहि होइत छैक। कुतूहल तथा आनन्दक वशीभूत भऽ लोक केवल कानहिसँ सुनि कऽ ई सभ सीखि लैत छथि। एहिमे हुनक सहज प्रवृत्तिक रागात्मक योग होइत छनि। ई लोकगीत जन-मनक विस्तृत नभोमण्डलमे हल्लुक सतरंगा मेघ जकाँ थिरकैत रहैत अछि। धरतीक तृष्णा-निवारणक लेल जाहि प्रकारेँ सरस जलद जल बरिसाबैछ, ताहि प्रकारेँ सर्वजन हृदयमे रसक आलोड़न होयबाक कारणेँ एकर सहज विकास होमऽ लगैछ।

परम्परानुगत रूपसँ लोक-साहित्यक विधिवत् विश्लेषण, विवेचन आ प्रचार-प्रसारक लेल संस्था, संप्रदाय, तथा परिपाटीक निर्माण एही लेल नहि भऽ सकल अछि जे विशिष्ट शिक्षा-सम्पन्न लोक एहि दिशामे उन्मुख नहि भेल छथि। एम्हर किछु वर्षसँ उच्चस्तरीय साहित्य- समालोचकगण लोक-साहित्यक विश्लेषण आ अध्ययन आरम्भ कयने छथि। अन्यथा जाहि समाजमे रस-परिवेशनक दायित्व लोकसाहित्यक ऊपर अछि ताहि समाजमे ओकर समालोचकक नितान्त अभाव छैक। ग्रहणीय बुझलापर समग्र समाजे लोकगीतकेँ ग्रहण करैछ आ वर्जनीय बुझला उत्तर सम्पूर्ण समाजे ओकरा त्यागि दैत छैक। व्यक्तिगत अथवा वर्गगत दृष्टिभंगीक ओहि ठाम कोनो प्रश्ने नहि उठैछ।

लोकगीतमे कोनो कथा नहि रहैत छैक, यदि रहितो छैक तँ अत्यन्त शिथिल भावसँ। अतएव लोकगीतक आकार प्राय: क्षुद्रे होइत अछि।

डा० वेरियर एलविन अपन 'फोक सांग्स ऑफ छत्तीसगढ़'मे कहने छथि जे भारतीय लोकगीतमे सर्वत्र प्रतीकात्मक पद्धतिक प्रयोग भेटैत अछि। भारतीय लोकगीतक परीक्षण कऽ देखलाक बाद ई स्पष्ट भऽ जाइछ जे लोकगीतक मुख्य विशेषतामे प्रतीकात्मक योजना सेहो छैक। किन्तु, सर्वत्र हम केवल प्रतीकात्मक नहि पबैत छी। अधिकांशत: लोकगीत सरल आओर सुबोध होइत छैक। प्रतीकात्मकता यत्र-तत्र भेटैत छैक। मैथिली लोकगीतमे 'धर्मराजक गीत', 'ब्रह्मक गीत' आओर 'निरगुन' (मृत्यु-गीत) आदिमे प्रतीकात्मकता भेटैछ। उदाहरणक लेल निम्नलिखित गीत द्रष्टव्य अछि:-

पिया ऐला जे हमार, भेजल दोलिया कहार।

अब त जैबै ससुरारि, सुनु हे सजनी ।।

एहि ठाम पियाक अर्थ छैक ब्रह्म अथवा भगवान, दोलिया कहारक अर्थ अछि अर्थी आओर ससुरारिक अछि मोक्ष धाम अथवा वैकुण्ठ धाम। एहि प्रकारेँ 'धर्मराजक गीत'मे 'तीतर', 'हंस' आओर 'सुगवा' क प्रयोग 'प्राण' अथवा आत्माक लेल भेल छैक।

लोकगीतक ई विशेषता सेहो महत्वपूर्ण अछि जे ओकर भावे प्राणस्वरूप होइत छैक। सुर तँ ओकर अंग मात्र थिकैक। गीतक संग सुरक वैह सम्बन्ध छैक जे प्राणक देहक संग अथवा वाकक अर्थक संग (वागर्थाविव संपृक्तौ) होइत अछि। अत: परम भावमयताक स्थितिमे अत्यन्त वेगक संग धारावाहिक रूपसँ गिरि-निर्झर जकाँ लोकगीत जनकण्ठसँ नि:सृत होइत अछि।

अधिकांश स्थलमे टेककेँ दोहरयबाक कारणेँ गीत लम्बा बुझि पड़ैछ। लोकगीतमे वाद्यक स्थान नितान्त गौण अछि। अधिकांश लोकगीत बिना वाद्य-यन्त्रक केवल मौखिक रूपेँ गाओल जाइत अछि।

सरस आ कलात्मक गीतक माध्यमे जीवनक गम्भीर तत्त्वक परिवेशनक कला मैथिलीक अपन वैशिष्ट्य थीक। मैथिललोकनिमे जीवन-जिज्ञासा सर्वत्र दर्शन-शाखादिक रूप नहि धारण करैछ, वरन ओ प्राय: सहज भावसँ जीवनक प्राय: समस्त चिन्ता-धाराक अभिव्यक्ति भऽ जाइछ। फलत: मैथिली

लोक-गीतक परिचयमे हुनकालोकनिक समग्र लोक-जीवनक परिचय भेटि जाइछ।

एहिठाम 'मैथिली लोक-गीत'क कतिपय प्रमुख विशेषताक संक्षेपमे उल्लेख कयल जा रहल अछि:-

मैथिली लोक-गीतमे भाषाक सरलता, सुबोधता आ वेग-सम्पन्नता पाओल जाइछ।

एहि गीत सभमे भावक उदारता प्रचुर परिमाणमे भेटैछ। सर्वत्र संकीर्ण भावनाक भर्त्सना आ उदार भावनाक प्रशंसा भेटैत अछि। कोनो भौतिक उत्कर्षमे सहजहि धनधान्य लुटा देबाक भावक चित्रण भेटैछ। 'सोहर'क गीतमे पुत्र-जन्मक अवसरपर आनन्दमग्न भऽ कऽ गृहपति सर्वस्व लुटबऽ चाहैछ। ओ कोनो याचककेँ निराश कऽ कऽ नहि फिरबऽ चाहैछ।

सेर जोखि सोनमा लुटायब, पसेरि जोखि रुपया रे।

सौंसे अजोध्या लुटायब, किछु नहि राखब रे।।

मैथिली लोकगीतक तेसर विशेषता अछि मंगलैषणाक प्राधान्य। मैथिली लोकगीतकार अपन वैयक्तिक जीवनमे, परिवारमे तथा समाजमे शान्ति तथा अभ्युदयक मंगलकामना करैत अछि। ओ देवी-देवतासँ जखन विनती करैछ तँ अपन दुख-दैन्यक दूरीकरणक लेल सेहो अनुरोध करैछ।

भारत जन बहुराय मरै छथि, इलट बिलट कए हे पृथ्वी ।

सब अपजस अहींकेँ होइये, हृदय बिचारु हे देवी ।।

मैथिली लोक-गीतक चतुर्थ विशेषता अछि धर्मोन्मुख जीवनक कामना। प्रत्येक व्यक्ति समाजमे अपन विकास चाहैछ। ई विकास एहन होयबाक चाही जे दोसरक विकासमे बाधक नहि भऽ जाय। मनक वृत्ति चंचल होइछ। मन अधर्मक दिस नहि जाकऽ धर्म-मार्गक अनुसरण कऽ सकय, एकर प्रार्थना सतत् कयल जाइछ।

मैथिली लोक-गीतमे पारिवारिक आ सामाजिक सम्बन्धक आदर्शीकरणक प्रयास सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। आदर्श भाइ, आदर्श बहिन, आदर्श शिष्य, आदर्श मित्र, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक तथा समुन्नत नागरिकक आदर्श एहि गीतसभमे भरल अछि।

●

शब्दार्थ : नि:सृत = बहरायल, निकलल; नमनीय = जे झुकाओल जा सकय; पूज्य, अगांगी = अचल; मंगलैषणा = लोक कल्याणक अभिलाषा ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लोकगीत की थिक ?
2. लोकगीतक रक्षा कथीमे होइत अछि?
3. 'स्वरकार' कोन गीतमे होइत अछि ?
4. समाजक संग लोक-साहित्यक कोन सम्बन्ध अछि ?
5. कथानक कोन रूपमे लोकगीतमे रहैत अछि?
6. डा० वेरियर एलविनक की कहब छनि ?
7. गीतक संग सुरक केहेन सम्बन्ध अछि ?
8. प्रस्तुत पाठमे लेखिका लोकगीतक कोन-कोन विशेषताक उल्लेख कयलनि अछि ?

गतिविधि:

1. **काव्यात्मक अभिव्यक्तिक विधा थिक– 'लोकगीत', स्पष्ट करैत अपन विचार लिखू ।**
2. **लोकगीत अपन रक्षा स्वयं कोना करैत अछि, अपन शब्दमे फड़िछाऊ?**
3. **शब्दकोषसँ ताकि अर्थ लिखू - अभिव्यक्ति, स्मृति, रचयिता, संकलन।**

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ ई बुझाबथि जे काव्यात्मक अभिव्यक्तिक कोन-कोन विधा थिक ।

(ख) शास्त्रीय गीत आ लोकगीतमे की भिन्नता अछि, शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।

(ग) लोक संस्कृतिक निर्माणमे मिश्र उपकरणक कोन योगदान रहैत अछि, एहिसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(घ) लोकगीतक अतिरिक्त लोक साहित्यक अन्य स्वरूप (यथा– लोककथा, लोकनाट्य आदि) सँ परिचित करयबाक प्रयोजन अछि।

□